Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय साहित्य और समाज पर पुनर्जागरण का प्रभाव

Dr. Manoj Kumar*

Assistant Professor of Hindi, Gandhi Adarsh College, Samalkha, Haryana

सार – ***पुनर्जागरण विचारों और मूल्यों की वह सबसे बड़ी और सबसे अधिक मूलगामी क्रांति है, जिसने सामन्ती व्यवस्था का नैतिक आधार छीनकर परवर्ती शक्तियों की सामाजिक राजनीतिक क्रांतियों का पद प्रशस्त किया। दीर्घकालीन भारतीय इतिहास में अनेक सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुए, लेकिन पुनर्जागरण शब्द मूलतः यूरोप के मध्ययुग और आधुनिक युग की संक्रान्ति का वाचक है। इसका सर्वप्रथम प्रयोग प्रसिद्ध फ्रांसीसी इतिहास-दार्शनिक 'मिशेलेट' ने 19वी. शती. के पूर्वार्द्ध में किया था, किन्तु इसे प्रचारित करने का सर्वप्रथम श्रेय इटली के इतिहासकार वर्कहार्ट को जाता है। नवजागरण युग वस्तुतः यूनानी-रोमीय क्लासिकी विद्या के पुनरूद्धार और प्रत्यावर्तन का युग था। 14वी. शती में यूरोप में जब. प्राचीन रोमीय साम्राज्य के विध्वंस से उत्पन्न अव्यवस्था शान्त हुई, तब यूरोप की संस्कृति में एक नयी जीवनधारा का उदय हुआ, जो 16वी. शती. तक प्रवाहमयी रही। इस युग में 'धर्म और दर्शन' नए रूप से परिभाशित हुये, कला और विज्ञान के क्षेत्र में नवीनता का आरम्भ हुआ और इसी के समानान्तर राजनीति और सामाजिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई पड़ने लगे।***

----------X----------

इस सन्धिकाल में मुख्यतः साम्राज्य एवं सामन्तशाही का ह्रास और आधुनिक राष्ट्रीय राज्यपरम्परा का उदय हुआ। यह मध्ययुगीन बन्धनों से मुक्ति और व्यक्तित्व चेतना के विकास का समय था, जिसके अन्तर्गत चर्च के प्रभाव की जगह व्यक्ति स्वातन्त्र्य और ऐहिक मूल्यों की प्रतिस्थापना होने लगी, ईश्वर की उपेक्षा से धर्मनिरपेक्ष मानववाद की स्थापना हुई। संतों की जगह दार्शनिकों और बुद्धिजीवियों ने ले ली, जो मन एवं स्वभाव पर नियन्त्रण की उपेक्षा उसके विकास की चर्चा करने लगे। इस नवक्रान्तिकारी चेतना ने मध्ययुगीन कूपमण्डूकता को भंग कर नए जीवनादर्शों की स्थापना की।

भारत में गुप्तयुग को नवजागरण-युग कहा जा सकता है, क्योंकि इसी युग में सर्वप्रथम आततायी शासक के विरूद्ध आक्रमण कर के राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक बन्धनों का विरोध किया गया, लेकिन मुख्यतः भारत में पुनरुत्थान का स्वरुप ब्रिटिश-काल में ही दिखाई देता है।

जहांगीर के समय में अंग्रेज भारत आए और मुम्बई, मद्रास एवं कलकता में व्यापार की जड़ें जमाते ही वे भारतीय शासकों की आपसी फूट का फायदा उठा, राजनीति में हिस्सा लेने लगे। 1757 ई. में सिराजुईद्दौला के विरूद्ध प्लासी के मैदान में युद्ध कर बंगाल पर और 1764 ई. में बक्सर की लड़ाई में शाहआलम को पराजित कर बिहार और अवध की दीवानगी भी अंग्रजों ने प्राप्त कर ली, पर पूरे भारत पर अधिपत्य जमाने के लिए उन्हें दो शक्तिशाली ताकतों-मराठों और सिक्खों को पराजित करना अनिवार्य था। आपसी फूट एवं ऐक्य के अभाव के कारण मराठे भी अट्ठसी और लासवारी के युद्ध में पराजित हुए। 1849 में सिक्खों को पराजित करने के बाद अंग्रेजों का साम्राज्य सम्पूर्ण भारत पर हो गया, पर लगातार मिलती सफलताओं के साथ अंग्रेजों के भारतीयों पर अत्याचार भी बढ़ने लगे। लार्ड डल्हौजी की नीतियों से असंतुष्ट देशी शासकों ने एकजुट हो 1857 ई. में व्यापक स्तर पर विरोध किया, जिसके फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी को समाप्त कर भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बना दिया।

अंग्रेजों ने भारत पर मजबूत पकड़ बनाने लिए अपनी शैक्षणिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक नीतियों में मूलभूत परिवर्तन किए, जिससे भारतीय नए संदर्भो से जुड़े। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर भारतीय समाज एवं संस्कृति में उथल-पुथल मचने लगी। अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त भारतीयों पर पश्चिमी सभ्यता का गहन प्रभाव पड़ा। यूरोपीय एवं भारतीय संस्कृति के संयोग से भारतीय समाज में एक नवीन चेतना का उन्मेश हुआ, जिससे प्रेरित होकर धर्म एवं समाज की नई मानवीय व्याख्या हुई। डॉ. मेघ ने आधुनिक युग को भारत का चैथा महानतम् रिनेसा माना है। इस नवोत्थान से अनेक सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक आन्दोलनों ने भारतीय

www.ignited.in

जन-जीवन, समाज और साहित्य में अनेक परिवर्तन उपस्थित किए।

आधुनिक भारतीय नवोत्थान में सर्वप्रथम राजा राममोहन राय के ब्रह्म समाज ने पहला नींव पत्थर रखा। इसके उपरान्त केशवचन्द्र सेन की प्रार्थना सभा, रामकृष्ण परमहंस एवं विवेकानन्द के रामकृष्ण मिशन, स्वामी दयानन्द के आर्यसमाज, एनीबेसेंट की थियासॉफिकल सोसाइटी ने भारतीय राष्ट्रीय राजनीतिक एवं सामाजिक नवजागरण को विकसित किया। इन सबका लक्ष्य प्राचीन धार्मिक रीति रिवाजों और कर्मकाण्डों का विरोध करके नई परिस्थितियों के अनुरूप धर्म की नई व्याख्या करना था। इन समाजों ने वैज्ञानिक शिक्षा प्रणाली के अभाव का विरोध किया और कानून, चिकित्सा, प्राकृतिक विज्ञान, पाश्चात्य भाषाओं एवं दर्शन को ग्रहण करने पर बल दिया।

आधुनिक सांस्कृतिक नवजागरण का प्रसार बगंला, गुजराती, मराठी और तेलगु से होकर हिन्दी साहित्य तक पहुंचा। हिन्दी में भारतेन्दु के नेतृत्व में आधुनिक नवजागरण को साहित्यिक अभिव्यक्ति मिली। इस युग के साहित्यकारों ने देश की उदात्त सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति भारतीयों में श्रद्धा के बीज अकुंरित कर उन्हें आर्थिक शोषण, मंहगाई और छुआ-छात आदि से मुक्त करवाना चाहा। इनके साहित्य में सामाजिक जड़ताओं के संदर्भ में असंतोष व्यंजित हुआ। इनकी रचनाओं में एक ओर तो विदेशी सभ्यता में रंगे युवकों पर व्यंग्य किया गया तो दूसरी ओर रूढ़िवादियों का उपहास भी उड़ाया। इस युग में राष्ट्रीय भावना और समष्टि चेतना का विकास हुआ। इस युग की महानतम् उपलब्धि खड़ी बोली का निर्माण है, जो राष्ट्रीय जनजीवन की अनिवार्य मांग थी। इस युग के विविधान्मुखी साहित्य ने नवजागरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

द्विवेदी युग की कृतियों में नवजागरण चेतना अधिक व्यापक रूप में व्यक्त हुई। राष्ट्रीय भावना के साथ इन कृतियों में-सुधारवादी, लोकसेवक, शीलवान और कर्मशील पात्रों के माध्यम से सांस्कृतिक नवोत्थान और सुधारात्मक आंदोलनो को स्वर प्रदान किए गए। साकेत, यशोधरा, विष्णुप्रिया, प्रियप्रवास आदि रचनाओं के माध्यम से नवयुगानुरूप-आत्मसंयम, मानवतावादी चेतना एवं आत्ममुक्ति जैसी भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। ऐतिहासिक नारियों के त्याग एवं प्रंम से सम्बद्ध उद्धार चरित्रों को चित्रित कर इस युग के कवियों ने नारी-जागरण-चेतना पर बल दिया। रामायण, महाभारत, शकुन्तला इत्यादि काव्यों के अनुवादों के माध्यम से राष्ट्रीय नवजागरण की नींव रखी।

छायावादी कविता पर नवजागरण चेतना का अत्यन्त गहन प्रभाव मिलता है। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक नवजागरण की विविध भंगिमाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। ब्रह्म समाजी आन्दोलन के प्रभाव से इन कवियों ने-नारी मुक्ति, मानवतावाद और विधवा विवाह का समर्थन किया और साथ ही यूरोप की नवीनताओं को भी अपनाया। आर्यसमाज के वैदिक दर्शन का प्रभाव भी इस युग की दार्शनिक मनोभूमि पर पड़ा। छायावाद केवल व्यक्तिवाद का काव्यात्मक उदय या अंग्रेजी के रोमांटिक साहित्य और रविन्द्रनाथ ठाकुर का अनुकरण मात्र नहीं था, बल्कि छायावाद का गहरा संबंध उस हिन्दू नवोत्थान से था, जिसका सत्र संचालन-राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, ब्रह्म समाज, आर्य समाज और दयानन्द इत्यादि ने किया था। इन सभी सुधारकों ने अपने धर्म और इतिहास के खण्डित और संशोधित रूप को लेकर ही आलोचकों का सामना किया। इन्होंने हिन्दुत्व की महिमा हिन्दुत्व के आधार पर ही बतलाई और भारतीयों को अपने इतिहास की याद दिला बदली हुई परिस्थितियों में भी मस्तक उठाकर चलने की प्रेरणा दी। यह नवजागरण चेतना आकस्मिक चेतना नहीं थी बल्कि इसके पीछे धर्म, संस्कृति और साहित्य को नए जीवन-मूल्यों से जोड़ने वाले नवजागरण का अपूर्व सहयोग प्राप्त था।

आधुनिक नवजागरण के कारण ही प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी साहित्य जनजीवन से जुड़ने में सक्षम हुआ। इस युग में साहित्य के साथ-2 समाज की भी विविधपक्षीय प्रगति हुई। जिससे आधुनिक भारत के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। इस युग में पूरे युगजीवन को मूल्यांकित करने वाली भौतिक चिंतन पर आधारित मानवीय दृष्टि की प्रतिष्ठा के साथ विविध परम्पराओं का भी युगबोध के संदर्भ में विश्लेषण हुआ। देव पूजा का स्थान लोक पूजा ने ले लिया। सामन्ती व्यवस्था के टूटने पर लोकतांत्रिक व्यवस्था का जन्म हुआ। इस युग की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्याख्या आध्यात्मिक मूल्यों के संदर्भ में हुई। गांधी जी की धार्मिक चेतना से जुड़ी राजनीतिक अवधारणा इसका प्रमाण है।

अब साहित्य मध्यकालीन बोध से मुक्त हो नवजागरण की ओर अग्रसर हुआ। जिससे भारतीय आधुनिकता नगर केन्द्रित हुई। यह आधुनिकता-धार्मिक कर्मकाण्डों और अंधविश्वासों के विरूद्व संघर्षरत हुई। अनके सामाजिक सुधारों के साथ-साथ औद्योगिकरण की ओर कदम उठाए गए। जाति प्रथा मुक्ति, नारी समानता, राष्ट्रीय उदारता और राजनीतिक अधिकारों के

www.ignited.in

साथ-साथ राष्ट्रीय भाषाओं में लिखा गया मानवोद्वारक साहित्य भारतीय नवजागरण की ही देन है।

भारतीय समाज पाश्चात्य दशर्न और ज्ञानविज्ञान की ओर उन्मुख हुआ। फलतः जनशक्ति नये औजार, नयी टैकनोलोजी, नये उद्योग आदि अपनाने के लिए दृढ़ संकल्प हुई। स्वतन्त्रता उपरान्त भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के लिए कई पंचवर्षीय योजनाएं लागू हुई, जिन द्वारा प्रजातंत्र प्रौढशिक्षा, विश्वशांति, गुट निरनिरपेक्षता, गरीबी उन्मुलन, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय-सांस्कृतिक एकता और अनेक मानवीय परम्पराओं द्वारा आधुनिक समाज के नवनिर्माण की नींव रखी गई। इन सब में युगीन साहित्यकारों का महत्वपूर्ण एवं सक्रिय योगदान रहा है।

आधुनिक साहित्य और ज्ञान-विज्ञान ने मनुष्य को पुरामूल्यों के स्थान पर नवीन अवधारणाएं प्रदान की। जिसके फलस्वरूप आधुनिक साहित्य मध्यकालीन बौद्धिकता से छूट आधुनिक परिवेश से जुड़ा। इस युग के साहित्यकारों ने समाज को नवीन आशाओं और सुखद भविष्य का नया स्वप्न दिखाया। आधुनिक साहित्य में-देश, धर्म, राष्ट्र और ईश्वर आदि की नवीन व्याख्याओं की अभिव्यंजना होने लगी, जिसने भारतीय संस्कृति और साहित्य दोनों को नवीन स्वरूप प्रदान कर समाज के नवोत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि भारतीय संस्कृति में इससे पूर्व भी बड़े-बडे नवोत्थान हुए है लेकिन वर्तमान नवोत्थान सबसे श्रेष्ठ और शक्तिशाली है, जिसने भारतीय साहित्य और समाज दोनों को विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान करवाया है।

संदर्भ:

1. History of Modern Indian by S.P. Sabharwal.
2. नवजागरण-हर्षनारायण
3. हिन्दी साहित्य कोश (भाग 1) -सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य - लक्ष्मी नारायण वाष्णेय
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डा. राम विलास गुप्त
7. मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्यखण्ड): सम्पा. नगेन्द्र

Corresponding Author

Dr. Manoj Kumar*

Assistant Professor of Hindi, Gandhi Adarsh College, Samalkha, Haryana